B.A. II Hindi Hons.

कृष्णभक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ

डॉ० सावित्री चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस०एम० कॉलेज, जहानाबाद।

भक्तिकाल में सगुण भक्ति की दो धारायें समानान्तर प्रवाहित हो रही थी। प्रथमत: रामभक्तिधारा और दूसरा कृष्णभक्तिधारा। यद्यपि दोनों ही धारायें सगुणमार्गी थी किन्तु दोनों के चिंतन एवं भक्तिभाव में पर्याप्त अन्तर था अतः दोनों धाराओं की प्रवृत्तियों में भी पर्याप्त अन्तर दिखना स्वाभाविक है। कृष्णभक्तिसाहित्य की प्रवृत्तियों को हम निम्नवत् रेखांकित कर सकते हैं —

(1) कृष्णलीला का वर्णन :— महाभारत, श्रीमद्भागवत एवं अन्य ग्रंथों में श्रीकृष्ण के तीन रूप स्पष्ट दृष्टिगत होते हैं - यथा — उपदेष्टा ऋषि, नीति कुशल क्षत्रिय नरेश तथा गोपाल एवं गोपी वल्लभ कृष्ण। भक्तिकाल में श्रीकृष्ण के गोपाल एवं गोपी वल्लभ कृष्ण के लोकरंजक रूप को ही स्वीकार किया गया है। इसका मुख्य कारण कृष्णभक्त आचार्यों का निर्देश एवं उनकी दार्शनिक परिकल्पना है। वल्लभ सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण का बाल एवं कैशोर रूप ही ग्राह्य है तो हरिदास सम्प्रदाय में उनके गोपी वल्लभ रसिक शिरोमणि रूप की प्रधानता है। कृष्णभक्त कवियों के बीच में भले दार्शनिक एवं साम्प्रदायिक प्रतिबद्धता हो किन्तु उनमें एक समानता सर्वमान्यत: निर्विवाद रही है कि वे सभी लीलानन्दी हैं। वस्तुतः लीला का गान करना उनका मूल उद्देश्य है। यही कारण है कि संपूर्ण कृष्णभक्ति साहित्य में लोकरंजनकारी श्रीकृष्ण की लीलाओं का उन्मुक्त गान गया है। उनकी लीलाओं का प्रयोजन लीलानन्द के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। लीला का उद्देश्य अखंड आनन्द में जीवन की आध्यात्मिक परिपूर्णता की अभिव्यंजना करना है। इस लीलागान केलिए कृष्ण के अनेक रूपों की कल्पना की गयी है। बाल कृष्ण की बाललीला, सख्य भाव की लीला तथा माधुर्यभाव की लीला संपूर्ण भक्तिकाल में उपलब्ध है। वल्लभसम्प्रदाय के कवियों ने बाललीला का गान बड़ी तन्मयता से किया है उनमें भी सूरदास तो वात्सल्य वर्णन के सम्राट ही हैं। इनके सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ठीक ही टिप्पणी की है - "सूरदास अपनी बन्द आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना झांक आये हैं।"

इसके अतिरिक्त दानलीला, मानलीला, रासलीला इत्यादि का गान तो अत्यन्त विस्तृत रूप से उपलब्ध होता है। राधा-कृष्ण की प्रणयलीला के गान में संयोग एवं विप्रलम्भ शृंगार का वर्णन अत्यन्त हृदयहारी बन पड़ा है। किन्तु कालान्तर में इस वर्णन में अश्लीलता एवं विकृति का ~~अतिरेक~~ अतिरेक भी दिखाई पड़ता है।

(2) विषयवस्तु की मौलिक उद्भावना :- हिंदी के कृष्ण भक्तिसाहित्य की रचना के पूर्व अपभ्रंश, प्राकृत तथा संस्कृत भाषा में कृष्ण काव्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। इसके अतिरिक्त अनेक आचार्यों ने अपने सम्प्रदाय की स्थापना भी की थी जिनके आराध्य श्रीकृष्ण थे। वे तो सम्प्रदाय विशेष तथा लोक साहित्य में भी कृष्णलीला का वर्णन उपलब्ध था। किन्तु सत्य तो यह है कि संपूर्ण कृष्ण से सम्बद्ध सम्प्रदायों तथा कृष्णसाहित्य का उपजीव्य ग्रन्थ श्रीमद्भागवत महापुराण था। इस महापुराण में श्रीकृष्ण के अनेक रूपों का वर्णन है जिन्हें अपनी रुचि के अनुसार लोगों ने अपने साहित्य या सम्प्रदाय में अपनाया जैसा कि स्वाभाविक है कि पूर्ववर्ती साहित्य का प्रभाव परवर्ती साहित्य पर पड़ता है किन्तु भक्तिकालीन हिंदी कृष्णभक्ति साहित्य पर उसका प्रभाव उस रूप में नहीं पड़ा। इस साहित्य में हिंदी के भक्त कवियों ने मौलिक उद्भावना का चमत्कार दिखाया है। जैसे श्रीमद्भागवत में कहीं भी राधा का नाम नहीं आया है केवल प्रधान गोपी जो संभवतः राधा रही होगी का प्रयोग अनेक बार आया है। किन्तु हिंदी के कृष्ण भक्तिसाहित्य में वह प्रधान गोपी राधा बनकर उपस्थित हुई है जो संपूर्ण कृष्णलीला का आधार है। वैसे ही श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण स्वयं भी लीला में सम्मिलित नहीं होते वरन गोपियों के अतिशय आग्रह पर लीला में सम्मिलित होते हैं। इसके साथ ही इसके श्रीकृष्ण में एक निर्लिप्तता है, एक वैराग्य का भाव है। किन्तु हिंदी में श्रीकृष्ण ही लीला के सूत्रधार हैं। वे अपने वेणुवादन से गोपियों का आह्वान करते हैं और महारास के आयोजन में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। इसी प्रकार की अनेक मौलिक उद्भावनाएं हिंदी के कृष्णभक्तिसाहित्य में उपलब्ध हैं जो इसे *अपने परवर्ती साहित्य से विशिष्ट बनाती है।